आधार विचार

भारतीय भाषा परिवार की संकल्पना एवं पूर्वोत्तर की भाषाएँ

भारतीय भाषाओं का इतिहास अत्यंत प्राचीन और विस्तृत है। भारतीय व्याकरणाचार्यों और भाषाविदों ने न केवल शब्द और व्याकरण का परीक्षण किया, बल्कि भाषाओं के उद्गम, उनके परस्पर संबंध तथा ध्वनियों के आधार पर भी उनके परिवार निर्धारित किए। प्राचीन भारतीय विद्वानों ने भाषाओं को मुख्यतः मूलधातु–प्रणाली, ध्वनि-परिवर्तन, शब्द-व्युत्पत्ति, भौगोलिक प्रसार, व्याकरणिक संरचना तथा सांस्कृतिक परंपरा के आधार पर वर्गीकृत किया। इससे यह स्पष्ट हुआ कि भारत में पाई जाने वाली भाषाएँ केवल अलग-अलग प्रदेशों की बोलियाँ नहीं थीं, बल्कि उनकी एक ऐतिहासिक परंपरा तथा वैचारिक संबंध भी विद्यमान था।

पाणिनि, यास्क और भर्तृहरि ने शब्दों की व्युत्पत्ति, धातु-रचना और व्याकरणिक संरचना के आधार पर संस्कृत और उससे विकसित रूपों का विवेचन किया। पाणिनि ने वर्णध्वनि, प्रत्यय, संधि और शब्दरचना के नियम स्थापित कर भारतीय भाषाओं की एक साझा व्याकरणिक परंपरा सिद्ध की। इसका अर्थ यह हुआ कि भारतीय भाषाएँ एक ही मूल स्रोत से विकसित हुईं और समय के साथ बदलकर विविध रूप धारण करती गयीं। प्राचीन भारतीय विद्वानों ने भारतीय भाषाओं को केवल बोलियों का समूह न मानकर, एक विकसित भाषा-परंपरा, साझा भाषायी मूल और सांस्कृतिक निरंतरता के रूप में देखा। इन्हीं आधारों पर आगे चलकर आधुनिक भाषाविज्ञान में 'भारोपीय भाषा-परिवार' की संकल्पना विकसित हुई, जो भारतीय भाषा इतिहास की विशिष्टता को प्रमाणित करती है।

भारतीय भाषाएँ यद्यपि रूप, ध्वनि, व्याकरण और शब्दावली के स्तर पर एक-दूसरे से भिन्न दिखाई देती हैं, किंतु इनके मूल स्रोतों की खोज करने पर यह तथ्य स्पष्ट होता है कि इनका उद्गम अंततः एक ही सांस्कृतिक-ऐतिहासिक आधार से सम्बद्ध है। भारत में भाषाओं की विविधता एक प्राकृतिक प्रक्रिया है, परंतु इस विविधता के मूल में जो सांस्कृतिक और सभ्यतागत एकता है, वह भारतीय भाषा-परंपरा को एक ही उद्गम से जोड़ती है। वस्तुतः यह भारतीय ज्ञान-परंपरा के विकास की ही सतत प्रक्रिया का एक विशेष पक्ष है।

भारत की सभी भाषाओं का विकास एक ही सांस्कृतिक विस्तार में और एक साझा जीवन-दृष्टि के अंतर्गत हुआ। इसलिए इनके रूप भिन्न होते हुए भी इनके बीच सांस्कृतिक तथा शब्दगत संबंध स्पष्ट दिखाई देते हैं। उदाहरण के लिए, द्रविड़ भाषाओं में संस्कृत के बहुत से तत्सम शब्द और हिन्द-आर्य भाषाओं में द्रविड़ मूल के शब्द आज भी पाए जाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि ये भाषाएँ अलग-अलग विकसित होकर भी कालांतर से परस्पर घनिष्ठ संपर्क में रहीं। प्रारंभ में विभाजनकारी तत्वों ने इसे पृथक-पृथक दिखाने का प्रयास किया। किंतु अब किए जा रहे नए शोधों तथा अध्ययनों से यह धारणा बदल रही है तथा एक समन्वयवादी तथा पारस्परिक आचार-विचार की एक नवीन इतिहास-दृष्टि विकसित हो रही है।

संरक्षक

प्रो.जोराम बेगी
अध्यक्ष
प्रशासनिक परिषद्
विवेकानंद केंद्र विद्यालय अरुणाचल प्रदेश ट्रस्ट

प्रो. हितेंद्र कुमार मिश्र
निदेशक
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
शिक्षा मंत्रालय (भारत सरकार), नई दिल्ली

मार्गदर्शक

सुश्री सुजाता नायक
सचिव, विवेकानंद केंद्र विद्यालय अरुणाचल प्रदेश ट्रस्ट

श्री रुपेश माथुर
संयुक्त सचिव, विवेकानंद केंद्र विद्यालय अरुणाचल प्रदेश ट्रस्ट

डॉ. एम. नीथि पेरूमल
प्राचार्य, वी.के.सी.टी.ई.

संगोष्ठी प्रभारी

डॉ. मोहम्मद नसीम
सहायक निदेशक (भाषा), केंद्रीय हिंदी निदेशालय
शिक्षा मंत्रालय (भारत सरकार), नई दिल्ली

संयोजक

डॉ. संजय यादव
सहायक आचार्य, वी.के.सी.टी.ई.

सुश्री मिनी मेतो
सहायक आचार्या, वी.के.सी.टी.ई.

सत्यमेव जयते

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय भाषा परिवार की संकल्पना एवं पूर्वोत्तर की भाषाएँ

2-3 फ़रवरी 2026

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, उच्चतर शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय (भारत सरकार) एवं विवेकानंद केंद्र कॉलेज ऑफ़ टीचर एजुकेशन, निर्जुली, अरुणाचल प्रदेश के संयुक्त तत्वाधान में

संगोष्ठी स्थल

बहुद्देशीय कक्ष (Multipurpose Hall), विवेकानंद केंद्र कॉलेज ऑफ़ टीचर एजुकेशन निर्जुली, अरुणाचल प्रदेश - 791109

पंजीकरण लिंक

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSeeo9fvEGBXkafSh-nzW-yk12QbDlPaLofb-RF2xzBWsKa2-g/viewform?usp=publish-editor

प्रस्तुत संगोष्ठी का पंजीकरण निःशुल्क है

भाषा परिवारों के सांस्कृतिक आधार को देखें तो भारतीय संस्कृति वैदिक, पौराणिक, शैव, वैष्णव, बौद्ध व जैन परंपराओं से निर्मित है। इन परंपराओं का प्रभाव भारत की सभी भाषाओं पर देखा जा सकता है। चाहे दक्षिण भारत का साहित्य हो या उत्तर का;पूजा-पद्धतियों, दार्शनिक संकल्पनाओं, धार्मिक शब्दों और सांस्कृतिक प्रतीकों में बहुत तरह की समानताएँ परिलक्षित होती हैं। यह सांस्कृतिक एकता बताती है कि भाषा की जड़ें एक ही सांस्कृतिक धारा से पोषित हुई हैं।

भाषा परिवारों के व्याकरणिक स्तर पर भी एकता दिखाई देती है। पाणिनि के व्याकरण ने हिंद-आर्य भाषाओं के गठन को सूत्रबद्ध किया, लेकिन उसी व्याकरणिक परंपरा ने द्रविड़ व्याकरणकारों और प्राकृत-अपभ्रंश रूपों को भी प्रभावित किया। इसीलिए भारतीय भाषाओं में वाक्यरचना, शब्दरचना और प्रत्यय-व्यवस्था में परस्पर समानता पाई जाती है।

भाषा परिवारों के भाषिक समन्वय का स्वरूप यह सिद्ध करता है कि भारतीय भाषाएँ अलग-अलग न होकर परस्पर मिल-जुलकर विकसित हुई हैं। अनेक भाषाई शोधों में यह प्रमाणित किया गया है कि भारतीय भाषाएँ अपने शब्द-स्रोत, ध्वनि-रचना और सांस्कृतिक विरासत में एक-दूसरे का प्रभाव ग्रहण करती आई हैं। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि भारतीय भाषाओं में मिलती-जुलती शब्दावली, समान रूपक-परंपराएँ और ध्वनि-समूह एक ही सांस्कृतिक आधार की ओर संकेत करती हैं।

भारतीय भाषाएँ अलग-अलग दिशा में विकसित होने के बावजूद एक ही सभ्यतागत धारा से उत्पन्न हुई हैं। इनके विकास में भौगोलिक दूरी और जातीय विविधता अवश्य थी, किंतु इनका मूल स्रोत एक सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भाषिक परंपरा रही, जो भारतीय एकता और सांस्कृतिक समन्वय की सबसे बड़ी पहचान है। अंततः यह कहा जा सकता है कि सभी भारतीय भाषा-परिवार संस्कृत, वैदिक परंपरा, भारतीय संस्कृति और सभ्यता की समान ऐतिहासिक जड़ों से उत्पन्न हुए हैं, इसलिए इनका उद्गम भिन्न नहीं अपितु एक ही है। भारतीय भाषा परिवार को नए संदर्भों में व्याख्यायित करना तथा समान तत्वों को धरातल पर लाना आज की महती आवश्यकता है ताकि हम औपनिवेशिक दासता तथा उनके द्वारा निर्मित संकल्पनाओं से मुक्त हों एवं अपनी समृद्ध विरासत पर गर्व कर सकें।

उपविषय

1. भारतीय भाषाओं का ऐतिहासिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य
2. भारतीय भाषा परिवार की संकल्पना
3. पूर्वोत्तर भारत की प्रमुख भाषाएँ और उनकी विविधता
4. भारतीय भाषाओं का सांस्कृतिक, शैक्षणिक और सामाजिक महत्त्व
5. भारतीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और भविष्य की चुनौती
6. भारतीय भाषा परिवारों का उद्गम और विकास
7. भारतीय भाषाओं का पारस्परिक सांस्कृतिक संबंध
8. पूर्वोत्तर की भाषाओं का साहित्य और कला में योगदान
9. भारतीय भाषाओं की मौखिक परंपरा और लोक साहित्य
10. भारतीय भाषाओं की संरचना एवं व्याकरणिक विशेषताएँ
11. भारतीय भाषाएँ एवं तकनीक
12. भारतीय भाषाओं का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक योगदान

आयोजक मण्डल

श्री सुमित कुमार बराल, डॉ. संजीब बर्मन

श्री आलोक सिंह यादव, श्री संजीव कुमार ठाकुर

डॉ. डिलिमा सिगा, श्री फुर्पा श्रिंग बप्पू

श्री अनिर्बन सांतरा, श्री मत्तु नियुम्पू

सुश्री अभिलाषा कुमारी, श्री रंजन सिंह

सुश्री डॉली देओरी, श्री चंदन ठाकुर

श्री भूपेन सोनोवाल, श्री तेखम लामा

महत्त्वपूर्ण दिनांक

सहभागिता तथा शोध सार जमा करने हेतु गूगल फॉर्म भरने की अंतिम तिथि- 15/01/2026

शोध पत्र जमा करने की अंतिम तिथि -25/01/2026

शोध पत्र निम्नलिखित ई. मेल पर भेजें-

vkctecsw@vkvapt.org

समन्वयक-

पंजीकरण हेतु- श्री अनिर्बन सांतरा -(9933723132)

शोध सार/पत्र- डॉ. संजय यादव - (9899879831, 9863661175)

अन्य पूछताछ हेतु-

श्री आलोक सिंह यादव-(9366512802)

संगोष्ठी स्थल

बहुद्देशीय कक्ष (Multipurpose Hall), विवेकानंद केंद्र कॉलेज ऑफ़ टीचर एजुकेशन, निर्जुली, अरुणाचल प्रदेश - 791109

शोध पत्र प्रस्तुतकर्ता को किसी भी प्रकार का यात्रा भत्ता एवं दैनिक भत्ता प्रदान नही किया जायेगा